IJAER/March-April-2022/Volume-11/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

गिजुभाई के शैक्षिक भ्रमण के संदर्भ मं विचार

अशोक कुमार यादव
(पी.एच.डी. शोधार्थी)
सनराइज विश्वविद्यालय
अलवर (राजस्थान)

डॉ0 एस. हुसैन
(एसोसिएट प्रोफेसर)
शिक्षा शास्त्र विभाग
सनराइज विश्वविद्यालय
अलवर (राजस्थान)

गिजूभाई बधेका का जन्म चित्तल सौराष्ट (गुजरात) में 15 नवम्बर 1885 में हुआ था। उनका पूरा नाम गिरिजाघर भगवान जी बधेका था। इस पूरे नाम की अपेक्षा लोग उन्हे गिजूभाई कहकर पुकारते थे। 1915 में वे श्री दक्षिणामूर्ति विद्यार्थी भवन के कानूनी सलाहकार बन गये। तथा 1918 में दक्षिणामूर्ति विद्यालय भवन था। इस विनय भवन के आचार्य के रूप में गिजू भाई ने 4 वर्ष तक कार्य किया। 1920 में उन्होने बाल मन्दिर की स्थापना की तथा वकालात छोड़कर पूरी तरह बाल शिक्षा के लिए समर्पित हो गए तथा इस क्षेत्र में उन्होनें नये–नये प्रयोग कियें।

इनका दक्षिणामूर्ति बाल मन्दिर बच्चों के सम्यक् इन्द्रिय विकास, शांति की क्रीडा, शैक्षिक भ्रमण, शारीरिक कार्य, तथा कहानी श्रवण जैसी प्रवृत्तियों का केन्द्र था। जिसमें बच्चे हँसते–हँसते मनवांछित गतिविधियों में भाग लेते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे। गिजू भाई द्वारा भावनगर में तख्तेश्वर मन्दिर के पास टैक्सी पर स्थापित बालमन्दिर का उद्घाटन 1922 में कस्तूरबा गाँधी के कर कमलों से हुआ था। उन्होने 1925 में भावनगर में प्रथम मॉण्टेसरी सम्मेलन आयोजित किया जिसके साथ उन्होने पहला अध्यापन मन्दिर स्थापित किया। 1938 में उन्होने राजकोट में अध्यापन मन्दिर स्थापित किया जो शिक्षा के क्षेत्र में उनका अन्तिम अवदान था। इनका समस्त जीवन बाल शिक्षा के क्षेत्र में अनवरत् व्यस्तता इनकी चरम् उपलब्धि थी। वे विविध विषयों के शिक्षण के साथ बच्चों में सत्य, अहिंसा, करूणा, सहयोग, सहकार जैसे मानवीय गुणों के विकास पर अधिक बल देते हुए तथा शिक्षा के क्षेत्र में उन गतिविधियों को अपरिहार्य मानते थे जिनसे इन गुणों का विकास हों।

गिजूभाई से 16 वर्ष पूर्व गुजरात में गाँधी जी ने जन्म लिया था। गाँधी जी यदि राष्ट्रपिता थे तो ''बालको के गाँधी'' गिजूभाई बालकों के लिए ''मूंछों वाली माँ थे।'' प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में जिन शिक्षाविद् ने मौलिक कार्य किया उनमें गिजू भाई बधेका का नाम अग्रणी है। जिनके बारे में स्वंय गाँधी जी ने लिखा था– ''गिजू भाई के बारे में कुछ लिखने वाला मैं कौन हूँ? उनके कार्यो ने तो मुझे सदैव मुग्ध किया है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि उनका कार्य आगे बड़ चलेगा।

साहित्यिक कृतियाँ :–

गिजूभाई का साहित्य पूरे भारत की अमूल्य धरोहर है क्योंकि उनकी कृतियाँ शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत कर्मियों का ही नहीं अपितु माता–पिता का भी पथ आलौकित कर सकती है। इनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तक 'दिवास्वप्न' है यह प्राथमिक शिक्षा पर केन्द्रित है जिसमें इनके भाषा, इतिहास, भूगोल, गणित, व्याकरण आदि के मनोरंजन प्रयोग है। मॉण्टेसरी पद्वति पर इनकी दो पुस्तकें बाल मन्दिर या पूर्व प्राथमिक शिक्षण के लिए सर्वाधिक उपयोगी है जिसमें मॉण्टेसरी के दर्शन ओर प्रयोगों का अत्यन्त रोचक वर्णन है। बाल शिक्षण ''जैसा मैं समझा पाया'' यह पुस्तक पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक दोनों ही स्तर के लिए उपयोगी है क्योंकि इसमें इन्होनें

बच्चों के सीखने के मनोविज्ञान पर आधारित उनके तत्वों का वर्णन किया है। ''माता–पिता से'' ''माँ बाप बनना कठिन है।'' ''माता पिता के प्रश्न'' और माँ बच्चों की माथापच्ची'' उनके ये पुस्तक उन अभिभावकों माता–पिताओं के लिए है, जो बच्चों को शिक्षा के प्रति अधिक संवेदनशील श्रेष्ठ कृतियाँ है जिनके आधार पर हम प्रचलित शिक्षा मैं नवाचार और प्रयोग करके शिक्षा को बच्चों की रूचि और आनन्द के अनुरूप बना सकते है।

बाल मन्दिर और गिजूभाई द्वारा अपनाई गई पद्वतियाँ –

गिजूभाई ने कुल मिलाकर 22 पद्वतियों का प्राथमिक शिक्षा के स्तर के लिए प्रयोग किया था मगर बालमन्दिर के लिए उन्होनें कोई एक निश्चित पद्वति तय नहीं की थी। उनका आधार मॉण्टेसरी था। और प्रयोग भी उसी एक केन्द्रीत थे। इन्होनें जिन पद्वतियों का प्रयोग किया उनमें से कुछ बाल मन्दिर या पूर्व प्राथमिक स्तर के लिए भी उपयोग हैः जैसे–

1. प्रश्नोत्तर पद्वति :–

यह पद्वति अपनाने से बच्चे प्रारम्भ से ही हीनता की भावना से मुक्त होकर साहसी बनते है। अपनी जिज्ञासा या उत्सुकता को शांत कर सकते है और साथियों और शिक्षक के साथ मित्रता स्थापित कर सकते है। गिजू भाई बच्चों को आपस में समूह में बैंठाकर अपने आप प्रश्न करने, उत्तर देने या खोजने और स्वंय भी प्रश्न खेल में शामिल होने आदि प्रयोग करते थे। इससे बच्चे एक विशेष प्रकार की स्वतंत्रता और दृढता का अनुभव करते है।

2. जोड़ीदार पद्वति :–

मॉण्टेसर इस पद्वति का खूब प्रयोग करती थीं। इसमें कक्षागत शिक्षा के बजाय व्यक्तिगत शिक्षा पर जोर रहता है। इसमें बच्चे स्वंय अपनी शिक्षा करते है और शिक्षक का सहारा लेना कम करते जाते है। विद्यार्थी स्वंय अपना व साथियो के बीच गुट बना लेते है। इसमें समूह शिक्षा में लगने वाले समय से कम समय लगता है। और बच्चे स्वंय अपनी पसन्द की जोड़ी बनाकर सीखते है। खेलते है। और तरह–तरह की गतिविधियाँ करते है। इससे सीखने की गति तेज होती है।

3. नाट्य प्रयोग पद्वति :–

बच्चे अनुकरण में मजा लेते है। तरह–तरह के अभिनय या नकल करना उन्हे पसन्द होता है। अपने सामने घटी घटनाओं को वे बड़े, मनोरंजन ढंग से बताते है। इससे उनकी सृजन एवं कल्पनाशक्ति का विकास होता है। और अनेक बाल कथाओं कहानी घटनाओं के आधार पर नाटक करके बच्चे जल्दी सीखने लगते है।

4. त्रिपद प्रणाली :–

यह प्रणाली बाल मन्दिरों में अधिक प्रचलित है। इसमें प्रथम चरण में बच्चों को वस्तु और संज्ञा के साथ जोड़ा जाता है। संज्ञा का नाम लेकर वस्तु का परिचय दूसरे चरण में कराया जाता है। और तीसरे चरण में यह पुष्टि की जाती है। कि वस्तु से संज्ञा का वस्तु में ज्ञान हुआ था नहीं।

5. किण्डरगार्टन पद्वति :–

इस पद्वति को पेस्ताँलाजी के शिष्य फ्रोबेल ने बालवाडी के माध्यम से अपनाया। इसके अन्तर्गत बच्चों मेंः 1. एकता 2. आंतरिक विकास और 3. पारस्परिक सम्बन्ध का प्रयोग इस प्रकार होता है। कि बच्चों

की साहित्य समझ बढ़ती है। सामूहिक शिक्षा इस प्रणाली का गुण है बालक की शारीरिक व मानसिक विकास के लिए उनकी रूचियों का महत्तव इस पद्वति में सर्वाधिक है वाटिका, प्रहलाद, कहानी कथन, प्रकृति व प्राणियों से प्रेम, अवलोकन एकाग्रता आदि इस पद्वति के विशेष तत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. बधेका गिजूभाई : बाल शिक्षण। प्रकाशक मॉण्टेसरी बाल–शिक्षण समिति राजलदेसर (चुरू) 331802
2. बधेका गिजूभाईः गिजूभाई का शिक्षा में योगदान, सुरजीत प्रकाशन, दाऊजी मंदिर के पस, बीकानेर पाठक, भरतलाल
3. बाल शिक्षण जैसा मैने समझा, गिजूभाई अंकित पब्लिकेशनन मानसरोवर, जयपुर
4. बाल शिक्षण जैसा मैनें समझा, गिजूभाई अंकित पब्लिकेशनन मानसरोवर, जयपुर
5. बधेका गिजूभाईः प्राथमिक शाला में कला कारीगरी की शिक्षा (प्रथम भाग) प्रकाशक मॉण्टेसरी बाल शिक्षक समिति राजभडेसर (चुरू) 331802